इकाई 31 चीनी कम्युनिस्ट पार्टी (सी.पी.सी.) का निर्माण

इकाई की रूपरेखा

31.0 उद्देश्य

इस इकाई का अध्ययन करने पर आप:

- चीनी कम्युनिस्ट पार्टी (सी.पी.सी.) के विषय में जान पायेंगे,
- सी.पी.सी. के प्रारम्भिक विचारों और
- गतिविधियों को समझ पाएंगे, और,
- उन सामाजिक तथा राजनीतिक परिस्थितियों को समझ सकेंगे जिनके अधीन सी.पी.सी. ने कार्य किया।

31.1 प्रस्तावना

स्वतन्त्रता के लिये भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन की भांति चीनी क्रान्ति एक ऐसा लम्बा सतत् संघर्ष था जिसके अन्दर हजारों लोगों ने अपने जीवन की आहुति दी। चीनी क्रान्ति ने 1949 में निम्नलिखित उद्देश्यों को प्राप्त किया।

- इसने अपने देश को साम्राज्यवादी नियन्त्रण से मुक्त किया, और
- इसने अपनी जनता को चीन के शासक वर्गों के शोषण से मुक्ति प्रदान करने में सफलता प्राप्त की।

क्रान्ति की सफलता में परिणति के कारण सम्पूर्ण पुराना तन्त्र धराशयी हो गया। अब एक ऐसी नवीन सामाजिक, आर्थिक तथा राजनीतिक व्यवस्था का निर्माण हुआ जिसको अधिक न्यायोचित समझा गया और वह जनता के हित में थी। यद्यपि उत्तर क्रान्ति काल में भी पुराने विचारों के विरुद्ध संघर्ष सतत् तौर पर चलता रहा फिर भी क्रान्ति ने चीनी जनता की मानसिकता में एक क्रान्तिकारी रूपांतरण किया।
इस रूपांतरण में चीनी कम्युनिस्ट पार्टी ने महत्वपूर्ण तथा अग्रिम भूमिका अदा की। इसी कारणवश यहां पर इस तथ्य पर ध्यान केन्द्रित किया जाना चाहिये कि 1921 में गठित चीनी साम्यवादी दल ने मात्र 28 वर्षों

में क्रान्ति को पूर्ण कर सरकार गठित की। इस क्रान्ति के महत्वपूर्ण नेतागण माओ त्सु-तुंग, चाऊ-ऐन-लाई, चु-तेह, ली शाओ ची, और चीन में प्रथम मार्क्सवादी महिला शियांग चींग-ची थे। इन सभी के अतिरिक्त पार्टी के ऐसे हजारों सक्रिय सदस्य थे जो पार्टी-तन्त्र का आधार थे और जो चीन के मज़दूर और किसान थे। इस तरह से चीन के साम्यवादी दल के विचारों तथा क्रान्तिकारी आंदोलन में उसके द्वारा दिये गये महत्वपूर्ण योगदान की जानकारी प्राप्त करना महत्वपूर्ण होगा।

इस इकाई में उन सामाजिक तथा राजनीतिक परिस्थितियों का विवेचन किया गया है जिनके बीच मार्क्सवादी विचारों का उद्‌भव एवं विकास हुआ, चीनी कम्युनिस्ट पार्टी का प्रारम्भ एवं उनके प्रारम्भिक विचारों का विकास हुआ। इन्हीं परिस्थितियों में चीन की मेहनतकश जनता को संगठित करने के प्रयास किये गये। इस इकाई में शिक्षित लोगों, बुद्धिजीवियों तथा छात्रों पर सी.पी.सी. के प्रभाव की भी विवेचना की गई है। चीन के साम्यवादी दल ने चीन की जनता को नई राजनीतिक चेतना प्रदान की और उनके संघर्षों को नयी दिशा प्रदान करने में एक महत्वपूर्ण योगदान किया और 1923 तक क्रान्तिकारी आंदोलन के चरित्र को एक स्वरूप प्रदान करने में भी अपनी भूमिका अदा की। 1923 में मजदूर आंदोलन का दमन करने के लिये जो चक्र चला उसने चीन के साम्यवादी दल के इतिहास के प्रथम दौर का समापन किया। सी.पी.सी. की इस प्रथम पराजय के कारणों का विश्लेषण करते हुए यह इकाई साम्यवादी दल के उपरोक्त सभी आयामों का विवेचन करेगी।

31.2 चीन में मार्क्सवाद का उदय

चीन में मार्क्सवाद का उदय अचानक ही नहीं हुआ था। चीन के बुद्धिजीवियों के बीच राष्ट्रवाद, उदारवाद एवं लोकतन्त्र के लिये लम्बी बहसें हुई थीं (देखें इकाई-30)। लेकिन बौद्धिक गतिविधियों तथा राजनीतिक कार्यशैली एवं मज़दूरों के व्यापक हितों के स्वरूप को मार्क्सवाद के द्वारा निर्धारित किया जाना भी इस समय शुरू हो चुका था। एक गहन संघर्ष के बाद चीन के मार्क्सवादियों ने चीन में समाजवादी व्यवस्था की स्थापना के अपने लक्ष्य तथा मज़दूर वर्ग के आंदोलनों के बीच एक अटूट संबंध स्थापित करने में सफलता प्राप्त की।

1921 तक 90 प्रतिशत चीन की जनता अशिक्षित थीं और इस वजह से विचारों का प्रसार काफी कम था। चीन के मज़दूरों एवं कृषकों को इस तरह के विचारों का कोई विशेष बोध न हो सका।

प्रारम्भिक क्रान्तिकारी उच्च मध्यम वर्गों से आये थे। इससे पूर्व की इकाइयों में हम देख चुके हैं कि चीन में राष्ट्रवादी तथा साम्राज्यवाद विरोधी विचारों के उद्‌भव में विभिन्न कारकों ने कैसे योगदान किया।

राष्ट्रवादी विचारधारा के तहत विद्यमान धार्मिक, सामाजिक तथा राजनीतिक व्यवस्था की कड़ी आलोचना की गई और इस विद्यमान व्यवस्था को आधुनिक एवं स्वतन्त्र चीन के विकास में एक अवरोध समझा गया (देखें इकाई-28)। इस पुरानी व्यवस्था की आलोचना पश्चिमी लोकतन्त्रवादी समर्थकों के द्वारा की गई। इस तरह के बुद्धिजीवी पश्चिमी लोकतन्त्र को आधुनिक एवं शक्तिशाली विज्ञान तथा संस्कृति से परिपूर्ण मानते थे।

मज़दूर एवं कृषक जिन भयंकर परिस्थितियों में अपना जीवन व्यतीत कर रहे थे उनके फलस्वरूप उनकी स्वयं की परेशानियां काफी गम्भीर थीं। अपने स्वयं के संघर्षों के द्वारा उन्हें भी नये प्रकार के अनुभव हुए थे। जहां एक ओर चीनी बुद्धिजीवी उनको राजनीतिक तौर पर शिक्षित करने का प्रयास कर रहे थे वहीं दूसरी ओर श्रमिकों एवं कृषकों के संघर्षों ने चीन के बुद्धिजीवियों के लिये नवीन दृष्टिकोणों को उजागर किया। यह दो तरह की प्रक्रिया थी और यह बड़ी ही निर्णायक भी थी क्योंकि इस प्रक्रिया के फलस्वरूप चीनी बुद्धिजीवियों तथा लोकतन्त्र, नयी संस्कृति और स्वतन्त्र चीन के लिये व्यवसायिक वर्गों तथा समाज में निहित स्वार्थों को चुनौती देने वाले मेहनतकशों के राजनीतिक संघर्षों के बीच की दूरी कम हुई। वास्तव में यह प्रक्रिया राष्ट्रीय स्वतन्त्रता एवं सामाजिक मुक्ति के लक्ष्यों का संयुक्त रूप से प्रतिनिधित्व करती थी। इस प्रक्रिया के चलते ये दोनों उस सामाजिक शक्ति के रूप में रूपांतरित हो गई जिसके कारण वह उच्च राजनीतिक कार्यवाही करने में सक्षम हो सकी। इस तरह सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि इसके कारण वे समाज को संगठित करने के लिये समाजवादी स्वरूप को अपनाने की ओर अग्रसर हुए।
1920 के वर्षों में चीनी समाज में जो नवीन विचार उदित हो रहे थे और मेहनतकश जनता का जो संघर्ष चल रहा था उनको एक-दूसरे से नवीन चेतना ने जोड़ा और इनको संगठित स्वरूप 1921 में चीन के

साम्यवादी दल के गठन ने प्रदान किया। चीन के साम्यवादी दल का गठन इस नयी चेतना की अभिव्यक्ति थी। यह चीनी क्रान्तिकारी आंदोलन के भीतर उदित होने वाली वामपंथी लहर का आधार बन गई। वामपंथी गुट ने सम्पूर्ण व्यवस्था को उखाड़ फेंकने का निश्चय किया और समाजवाद के निर्माण को अपना एक व्यापक लक्ष्य बना लिया।

31.2.1 अन्तर्राष्ट्रीय पृष्ठभूमि

जिस अन्तर्राष्ट्रीय पृष्ठभूमि में चीन का क्रान्तिकारी आंदोलन विकसित हुआ उसने चीन में मार्क्सवादी विचारों के प्रसार एवं स्वीकृति में महत्वपूर्ण योगदान किया। चीन की अर्थव्यवस्था के औपनिवेशीकरण के कारण जो असंतोष उत्पन्न हुआ वह समय-समय पर विभिन्न स्वरूपों में व्यक्त हुआ। भारत, रूस तथा बाद में दक्षिण अमरीका एवं अफ्रीका के पिछड़े देशों के समाजों की तुलना जिस समय पश्चिम के विकसित देशों के साथ की गई तब इन पिछड़े देशों में गहन बौद्धिक बहस चली और इस तरह के बौद्धिक विवादों का आधार यह था कि क्या अपने समाजों के पिछड़ेपन की विशेषताओं का परित्याग कर पश्चिम के विकसित समाजों की विशेषताओं को ग्रहण किया जाये या फिर अपने समाजों की श्रेष्ठतम विशेषताओं को पुनर्स्थापित कर पश्चिम की दमनकारी एवं "भ्रष्ट" व्यवस्था के विरुद्ध संघर्ष किया जाये। चीन के अन्दर भी इन दो शीर्षकों के इर्द-गिर्द वाद-विवाद होता रहा (देखें इकाई-28)। चीन में मार्क्सवादियों ने नये एवं आधुनिक चीन का निर्माण करने की अवधारणा के द्वारा पश्चिमी तथा जापानी साम्राज्यवाद के विरुद्ध संघर्ष के मार्ग का अनुसरण किया। इस तरह एक मार्ग स्वीकृत किया गया जो चीन की जनता के व्यापक हिस्सों के लिये दोनों तर्कों के दृष्टिकोण से हितकारी था।

चीन में इन विचारों को निम्न दो अन्तर्राष्ट्रीय घटनाओं ने और अधिक स्वीकार्य बना दिया—

1) पेरिस के शांति सम्मेलन में शांतुंग प्रस्ताव के माध्यम से शांतुंग में जर्मनी के विशेषाधिकारों को चीन को हस्तांतरित करने के बजाय जापान को हस्तांतरित कर दिया गया और इसके कारण चीन की जनता का पश्चिम से व्यापक तौर पर मोह भंग हुआ। चीन की जनता को पश्चिमी लोकतन्त्र पाखंडी एवं झूठा लगने लगा और इस भावना का स्पष्ट तौर पर रूपांतरण पश्चिमी साम्राज्यवाद के विरुद्ध हुआ। लेनिन की साम्राज्यवाद तथा क्रान्ति की अवधारणा ने चीनी बुद्धिजीवी वर्ग को और भी प्रभावित किया।
2) रूस में बोलशेविक क्रान्ति की सफलता ने भी चीन के बुद्धिजीवी वर्ग को समान रूप से आकर्षित किया। रूस एक ऐसे पिछड़े हुए देश का स्पष्ट प्रमाण था जिसने न केवल अपनी पुरानी जर्जर व्यवस्था को उखाड़ फेंका था बल्कि पश्चिमी साम्राज्यवाद को भी पराजित कर दिया था। अब मार्क्सवाद ने स्वयं को राजनीतिक कार्यवाही के लिये एक व्यवहारिक दर्शन के रूप में साबित कर दिया। इस तरह से मार्क्सवाद ने चीनी बुद्धिजीवी वर्ग को एक ऐसा दर्शन उपलब्ध कराया जिसके द्वारा वह "चीनी अतीत एवं वर्तमान के पश्चिमी प्रभुत्व — दोनों प्रकार की परम्पराओं का परित्याग कर सका"। इस तरह चीन के राष्ट्रीय मुक्ति आंदोलन में मार्क्सवाद एक शक्तिशाली स्रोत बन गया।

15 जुलाई, 1919 को रूस की नयी बोलशेविक सरकार ने चीनी जनता एवं चीनी सरकार को सम्बोधित करते हुए घोषणा की कि वह चीन के उन सभी क्षेत्रों पर अपने विशेषाधिकारों का परित्याग बगैर किसी हर्जाने के करती है जिन पर रूस के ज़ार ने अधिकार कर लिया था। रूस की नयी सरकार की यह घोषणा शांतुंग प्रस्ताव तथा इक्कीस मांगों के ठीक विपरीत थी।

ठीक भारत की भांति चीन एवं अन्य औपनिवेशिक देशों में सोवियत संघ का समर्थन पश्चिमी साम्राज्यवाद का विरोध करने वाले देश के रूप में बढ़ने लगा और पूर्व में राष्ट्रीय मुक्ति आंदोलनों तथा पश्चिम के समाजवादी संघर्षों के बीच आपसी हितों की पहचान को मान्यता दी जाने लगी। यह वही स्थिति थी जिसके लेनिन एवं चीनी मार्क्सवादी चेन तू-शू पक्षधर थे।

31.2.2 राजनीतिक वातावरण

चीन में राजनीतिक वातावरण को मार्क्सवाद की ओर रूपांतरित करने में 4 मई, 1919 के आंदोलन ने अति महत्वपूर्ण योगदान किया। चीन की कम्युनिस्ट पार्टी के संस्थापक चेन तू-शू तथा ली-ता-चाओ भी चार मई आंदोलन के नेता थे। लगभग आगामी पचास वर्षों तक चीन की कम्युनिस्ट पार्टी का नेतृत्व चार मई आंदोलन में भाग लेने वालों की पीढ़ी से आता रहा और इनमें चाऊ-ऐन-लाई तथा माओ त्से-तुंग प्रमुख थे। पार्टी के साधारण सदस्यों की एक बड़ी संख्या ने भी इस आंदोलन में अपना प्रथम क्रान्तिकारी राजनीतिक अनुभव प्राप्त किया था।

कन्फ्यूशियसवाद का विरोध, नयी शिक्षा का प्रसार, प्रेस तथा जन साहित्य में विशाल वृद्धि, प्रकाशन संस्थाओं, औषधि एवं आधुनिक न्यायालयों ने चार मई आंदोलन के दौरान आधुनिक विचारों के संवाहक बनने में महत्वपूर्ण योगदान किया। चीन की सामाजिक व्यवस्था में जो कुछ दमनात्मक था उसकी मूल आलोचना की गई थी और विज्ञान, लोकतन्त्र तथा साम्राज्यवाद विरोध में जो कुछ सकारात्मक था उन सभी का चीन के मार्क्सवादियों ने उचित समर्थन किया। इस सम्पूर्ण धरोहर को समाजवाद के उन विचारों के साथ मिश्रित कर दिया गया जिनके लिये मज़दूर वर्ग ने आंदोलन में अपना दावा किया। कम्युनिस्ट घोषणा पत्र, एंगेल्स की पुस्तक परिवार, निजी सम्पत्ति एवं राज्य का उदय, समाजवाद, उपयोगितावाद एवं विज्ञान जैसे मार्क्सवादी साहित्य का रूपांतरण 1919 के पहले ही चीन में पहुंच चुका था। ऐसे लोग जो जापानी या अन्य कुछ पश्चिमी भाषाओं का ज्ञान रखते थे वे और अधिक अध्ययन कर सकते थे और इस तरह पहले से ही समाजवादी विचारों के लिये चीन के बुद्धिजीवी वर्ग में कुछ सहानुभूति विद्यमान थी। लेकिन यह पश्चिमी उत्तरकालीन-युद्ध समझौतों एवं रूसी क्रान्ति के प्रति एक प्रतिक्रिया ही थी कि चार मई के आंदोलन ने एक ऐसी दिशा को सुनिश्चित किया जिससे मार्क्सवादियों का प्रभाव बढ़ने लगा और 1919 तथा 1920 के वर्षों में तेजी से उनके विचारों का प्रसार हुआ। चार मई के आंदोलन के दौरान बुद्धिजीवी वर्ग का मज़दूर वर्ग के साथ घनिष्ठ सक्रिय सहयोग होने के कारण भी मार्क्सवादी विचारों का प्रभाव बढ़ा। पीकिंग विश्वविद्यालय में ऐसे अनेक अध्ययन केन्द्रों का गठन हुआ जो समाजवाद के अध्ययन के प्रति समर्पित थे। ऐसी अनेक पत्रिकाओं का भी प्रकाशन होने लगा जो रूसी क्रान्ति तथा साम्राज्यवाद की बोलशेविक आलोचना से प्रभावित थी।

चार मई आंदोलन के दौरान चीन के अन्दर प्रथम आम हड़ताल हुई। 1919-21 के वर्षों के दौरान हड़तालों में बुद्धिजीवी वर्ग ने मेहनतकशों के साथ सक्रिय भाग लिया। वामपंथी बुद्धिजीवियों की अग्रणीय पत्रिका न्यू यूथ के अपने मई 1920 के सम्पूर्ण अंक में मज़दूरों की समस्याओं के विषय में लिखा। मई दिवस के आयोजनों में प्राध्यापकों, विद्यार्थियों एवं मज़दूरों ने भाग लिया। इस आंदोलन का अगला पड़ाव इस अंतःक्रिया को एक संगठित स्वरूप प्रदान करना था और यह कार्य उस समय सम्पन्न हुआ जबकि 1921 में चीनी कम्युनिस्ट पार्टी का गठन हुआ।

31.2.3 सामाजिक एवं राजनीतिक परिस्थितियां

लगभग पूरे चीन में मेहनतकशों की दरिद्र जीवन दशा ने ऐसा सामाजिक वातावरण तैयार किया जिसमें मार्क्सवाद का उदय हुआ।

दरिद्रता, गंदगी एवं शीघ्र मृत्यु देश के ग्रामीण अंचलों में 50 करोड़ जनता के जीवन का अंग थी। जिस समाज में चीन की जनता का अधिकतम भाग रहने के लिये बाध्य था उसकी निम्न विशेषतायें थीं—

- अपने बच्चों को मजबूरन बेचना,
- बुरे समय में घास एवं पेड़ों की छाल को खाना, और
- अपनी क्षमताओं के बाहर राजस्व एवं करों की अदायगी करना।

जहां एक ओर यह सभी घटित हो रहा था वहीं पर एक छोटा प्रबुद्ध वर्ग विलासिता पूर्ण जीवन व्यतीत करता था। चीन के ग्रामीण क्षेत्रों के तेजी से होने वाले व्यापारीकरण एवं धन आपूर्ति (बाजार तथा धन अर्थव्यवस्था का उदय) के कारण ग्रामीण अर्थव्यवस्था विश्व पूंजीवादी अर्थव्यवस्था से जुड़ गई। लेकिन इसके कारणवंश किसानों का शोषण और बढ़ गया। अनाज व्यापारी, महाजन, तथा प्रशासनिक अधिकारी जैसे सभी लोग जमींदारों के बीच से आये थे और वे सम्पूर्ण ग्रामीण अर्थव्यवस्था पर छा गये।

ग्रामीण चीन पर किये गये सभी अध्ययनों से स्पष्ट है कि 20वीं सदी में चीन के एक कृषक का जीवन 18वीं सदी की अपेक्षा कहीं अधिक कठिन हो गया था। आधुनिक युग में उसके जीवन स्तर में भारी गिरावट आयी। जनसंख्या की वृद्धि के कारण भूमि पर अधिक दबाव पड़ा। भूमि का स्वामित्व और सीमित हो जाने तथा अनाज के दामों में कमी होने के फलस्वरूप और अधिक किसान देहाड़ी मज़दूरों में बदल गये। बेरोजगारी के व्यापक तौर पर फैल जाने से मज़दूरी में भी गिरावट आयी। दरिद्रता, शोषण तथा युद्धों से ग्रसित किसान के लिये विद्यमान सामाजिक व्यवस्था के क्रान्तिकारी रूपांतरण के अतिरिक्त कोई रास्ता नहीं था।

1920 के वर्षों में कृषि समस्या या किसान-भूमि समस्या एक महत्वपूर्ण सामाजिक सवाल बन गया। इस समय जमींदार व्यवस्था पर हमले लगातार बढ़ते जा रहे थे। 20वीं सदी के प्रारम्भिक वर्षों में जो तूफान उत्पन्न हुआ उसने जमींदारों की स्थिति को काफी कमजोर बना दिया था। अब चीन का ग्रामीण क्षेत्र क्रान्तिकारी आंदोलनों की एक उर्वरक भूमि हो गई थी। अब वामपंथी बुद्धिजीवियों का यह कार्य था कि अपनी योजना के साथ ग्रामीण क्रान्तिकारियों को सूत्रबद्ध करें। एक अच्छी बात यह थी कि चीनी समाज का मुख्य भाग जनसंख्या के दृष्टिकोण के किसान ही थे। अब यह स्पष्ट था कि किसानों के जीवन एवं चेतना में रूपांतरण के बगैर चीन में कोई आधुनिक परिवर्तन सम्भव न था। लेकिन 1921 में भी किसानों का राजनीतिक क्षितिज काफी सीमित था। दूसरी ओर चीनी कम्युनिस्ट पार्टी को अभी किसानों के जबरदस्त हुए उभारों का भी अवलोकन करना था। यह केवल 1925 के बाद ही किया जा सका और इसी के बाद से चीन के कम्युनिस्ट आंदोलन ने किसानों से अपनी भारी शक्ति को प्राप्त किया।

मज़दूर वर्ग यद्यपि संख्या में कम था, लेकिन वह एक राजनीतिक शक्ति बन गया था क्योंकि बड़े-बड़े औद्योगिक केन्द्र उन्हीं स्थानों पर थे जो चीन के मुख्य राजनीतिक केन्द्र थे। उच्च मज़दूरी एवं अन्य मांगों के लिये मज़दूरों के संघर्ष प्रतिदिन के जीवन से जुड़े थे और इसी के कारण वे राजनीतिक अधिकारियों एवं फैक्ट्री मालिकों के बीच अपने हितों की पहचान करने में सफल हुए। इसलिये उनका राजनीतिक अधिकारियों के साथ प्रत्यक्ष संघर्ष हुआ।

उनकी हड़तालों का पुलिस के द्वारा बर्बरता पूर्ण दमन किया गया। पुलिस सीधे-सीधे राज्य का एक हथियार थी। मजदूरों की एक बड़ी संख्या विदेशी कारखानों में कार्यरत थी। इसके कारण वे प्रत्यक्ष तौर पर साम्राज्यवाद के विरोधी बन गये। इसलिये साम्राज्यवाद के विरुद्ध राष्ट्रवादी संघर्ष तथा चीन की मेहनतकश जनता की चीनी शासक वर्गों से सामाजिक मुक्ति के संघर्ष की जटिलताओं का सामना उनको चीन में मजदूर आंदोलन के प्रारम्भिक चरण में ही करना पड़ा। औद्योगीकरण के प्रारम्भिक चरण में बड़ी-बड़ी फैक्ट्रियों के केन्द्रीकरण के कारणवश एक फैक्ट्री में मजदूरों का भी केन्द्रीकरण हुआ और इसके कारण एक कारखाना मालिक के विरोध में मजदूरों की भी बड़ी तादाद एकत्रित हो गई। इससे मजदूर वर्ग का अपनी समस्याओं का संयुक्त तौर पर सम्मान करना सम्भव हो पाया और उनके बीच एकता भी कायम हुई तथा प्रारम्भिक चरण में ही उनके बीच वर्ग चेतना का उद्‌भव होना सम्भव हो पाया।

चार मई आंदोलन, प्रेस के विकास, सार्वजनिक सभाओं, नयी संस्कृति के विचारों एवं साहित्य के प्रसार तथा 1919-21 की घटनाओं में हिस्सेदारी के कारण शहरी क्षेत्रों में जो नया राजनीतिक वातावरण उत्पन्न हुआ उसने मजदूर वर्ग के सम्मुख एक नये परिप्रेक्ष्य को प्रस्तुत किया। मई 1919 में अध्यापक गण पीकिंग में मजदूरों के साथ हड़ताल में शामिल हुए यद्यपि उनको महीनों का वेतन न मिला था और ऊंची कीमतों के कारण उनका जीवन अधिक कठोर हो रहा था। 1920 में मजदूरों ने जापान-विरोधी बहिष्कार में भाग लिया। 1921 तक युद्ध के बाद फ्रांस से 28000 शिक्षित मजदूर वापस लौट चुके थे। उन्होंने चार मई आंदोलन को क्रान्तिकारी बनाने में सहायता की। इस तरह की परिस्थितियों में कम्युनिस्ट गुटों एवं इन मजदूरों ने एक दूसरे को अपने स्वाभाविक सहयोगियों के रूप में पाया। इस गठबंधन की अन्तिम परिणति चीन में एक कम्युनिस्ट पार्टी के गठन के रूप में हुई।

बोध प्रश्न 1

1) उन अन्तर्राष्ट्रीय घटनाओं की विवेचना कीजिये जिनके कारण चीन में साम्यवादी विचारों का प्रसार हुआ। उत्तर 10 **पंक्तियों में दें।**

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

2) 1919-20 के दौरान चीन में कैसा राजनीतिक वातावरण था? उत्तर 10 पंक्तियों में दें।

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

31.3 कम्युनिस्ट पार्टी : 1921

4 मई आंदोलन के दौरान गठित अध्ययन केन्द्र चीन के बुद्धिजीवियों के बीच संगठित आधार पर मार्क्सवादी विचारों के प्रसार का प्रथम प्रयास थे। 1920 की गर्मियों से चीन के विभिन्न भागों में कम्युनिस्ट राजनीतिक संगठनों की स्थापना के कार्य का प्रारम्भ किया गया और इस तरह का प्रथम संगठन शंघाई में अस्तित्व में आया। चेन तू-शू ने शंघाई गुट की स्थापना की थी तथा उसने न्यू यूथ नाम के गुट के औपचारिक पत्र का प्रकाशन भी शुरू किया। इस गुट ने "कम्युनिस्ट इन्टरनेशनल" के साथ अपना संपर्क कायम किया और रूस का कम्युनिस्ट ग्रेजोर वॉयतिंस्की इसके प्रतिनिधि के तौर पर चीन आया। अप्रैल, 1921 में इश्कुत्सुक में चीनी कॉमिंटर्न के कार्यालय की स्थापना की गई।

1920 के बसंत में ली ता-चाओ के नेतृत्व मे पीकिंग में कम्युनिस्ट गुटों की स्थापना हुई और शीघ्र ही उनका गठन अन्य नगरों में भी किया गया। अगस्त 1920 से शंघाई गुट ने *दि वर्ल्ड ऑफ लेबर* नाम के साप्ताहिक पत्र का प्रकाशन शुरू किया और जनवरी 1921 तक इसके 23 अंकों का प्रकाशन हो गया। पीकिंग से ली ता-चाओ ने *दि वॉयस ऑफ लेबरर* प्रकाशित किया और कैन्टन गुट ने *दि वर्कर्स* तथा *ग्री मेन एट वर्क* को निकालना शुरू किया। इन सभी पत्रिकाओं में मार्क्सवादी सिद्धान्तों तथा चीनी मज़दूर वर्ग की समस्याओं के विषय में विवेचन किया गया। चाऊ-ऐन-लाई तथा माओ त्से-तुंग ने हुनान में अध्ययन केन्द्र को संगठित किया। बहुत से चीनी कम्युनिस्ट फ्रांस में सक्रिय थे। इन गतिविधियों के कारण अधिक से अधिक बुद्धिजीवी एवं विद्यार्थीगण कम्युनिस्टों के इर्द-गिर्द एकत्रित होने लगे।

पुलिस से छुपकर जुलाई 1921 में शंघाई में बालिका छात्रावास में इन गुटों की एक बैठक हुई। पुलिस को इस बैठक का आभास हो गया और फिर बैठक के स्थान को चैकियांग में एक पर्यटक स्थल पर एक नाव में रखा गया। इसको चीनी कम्युनिस्ट पार्टी का प्रथम सम्मेलन कहा गया।

12 प्रतिनिधियों ने इस सम्मेलन में भाग लिया और वे 57 गुटों का प्रतिनिधित्व कर रहे थे। कम्युनिस्ट इन्टरनेशनल के एक प्रतिनिधि ने भी इस सम्मेलन में भाग लिया। इस सम्मेलन के द्वारा चीन की कम्युनिस्ट पार्टी के गठन का निर्णय किया गया। पुलिस द्वारा उन दिनों कम्युनिस्ट गुटों का जबरदस्त दमन किया जा रहा था। अतः चेन तू-शू एवं ली ता-चाओ ने पार्टी सम्मेलन न कह कर पार्टी के संस्थापकों का सम्मेलन घोषित किया। चेन तू-शू पार्टी का प्रथम महासचिव बना।

इस तरह अन्तर्राष्ट्रीय घटनाक्रम, विकसित होते मजदूर आंदोलन, राजनीतिक वातावरण का बढ़ता पैनापन और एक क्रान्तिकारी विचारधारा तथा क्रान्तिकारी दल के विकास की अन्तिम परिणति चीनी कम्युनिस्ट पार्टी

(सी.पी.सी.) के गठन के रूप में हुई। इस प्रकार चीन के राजनीतिक दृश्य में पूर्ण रूप से एक नये तत्व का समावेश हुआ।

31.4 प्रारम्भिक विचार

सी.पी.सी. ने अपनी प्रेरणा को रूस की अक्तूबर क्रान्ति से प्राप्त किया था तथा यह स्वयं भी मार्क्सवादी लेनिनवादी विचारों पर आधारित थी और पार्टी की "क्रान्तिकारी" भूमिका में विश्वास करती थी। मेहनतकश जनता के आंदोलनों विशेषकर मज़दूर वर्ग या सर्वहारा की अग्रिम भूमिका को निर्णायक समझा गया।

जैसा कि पहले भी कहा गया कि बुद्धिजीवी वर्ग के सभी भागों पर अक्तूबर क्रान्ति का प्रभाव पड़ा था। लेकिन चीन के मार्क्सवादियों ने इसकी सफलता की सम्भावना को न केवल एक पिछड़े देश में समझा था बल्कि वे यह भी मान रहे थे कि इसके द्वारा वे पश्चिमी साम्राज्यवाद को उखाड़ने की सम्भावना को देख रहे थे। 1917 की क्रान्ति के बाद रूस ने जिस सामाजिक-राजनीतिक ढांचे को अपनाया था वे स्वयं भी अपने समाज के लिये उसी प्रारूप को अपनाना चाहते थे। वे अपने देश में जो कुछ निर्मित करना चाहते थे यह उनका एक सुस्पष्ट प्रारूप था अर्थात् वे एक ऐसा समाज बनाना चाहते थे जो वर्ग विहीन (वर्ग शोषण से मुक्त) होगा और जिसके अन्तर्गत—

- निजी सम्पत्ति जो कि वर्ग दमन का मूल कारण थी — तुरन्त नष्ट हो जायेगी, और
- राजनीतिक तन्त्र का दिशा-निर्देशन मेहनतकश जनता के हितों के द्वारा होगा (अर्थात समाजवाद)।

जैसा कि मार्क्स ने लिखा था और जो रूसी क्रान्ति ने साबित किया था उसी के अनुरूप उनका विश्वास था कि इस तरह का परिवर्तन क्रान्ति के द्वारा किया जा सकता था। मार्क्स के विचारों पर आधारित क्रान्ति को केवल वर्ग युद्ध या वर्ग संघर्ष के द्वारा ही प्राप्त किया जा सकता था। उनका विचार था कि शासक वर्गों तथा मेहनतकश जनता के हितों के बीच निश्चित टकराव था (अर्थात् उनके बीच आन्तरिक संघर्ष निहित था)। ऐसा होने का यह कारण था क्योंकि शासक वर्गों के लाभ एवं विलासिता निश्चय ही मेहनतकशों के श्रम का फल थे और इसके लिये मेहनतकश जनता को पूर्ण अदायगी नहीं की जाती थी।

इससे आगे मार्क्स के विचारों पर आधारित उन्होंने यह भी समझा कि मेहनतकश वर्ग सबसे अधिक क्रान्तिकारी सामाजिक शक्ति है और सर्वहारा वर्ग की अग्रिम भूमिका होती है क्योंकि "इसके पास अपनी गुलामी को खोने के अलावा कुछ नहीं है"। क्योंकि यह केवल मेहनतकश वर्ग ही है जो अपने श्रम के द्वारा सम्पूर्ण आमदनी को पैदा करता है, लेकिन उसके पास कोई व्यक्तिगत सम्पत्ति नहीं है यही एक मात्र ऐसा वर्ग है जिसका निजी सम्पत्ति पर आधारित सामाजिक व्यवस्था में कोई अधिकार नहीं है। यह स्वाभाविक ही था कि मेहनतकश जनता का अधिक हित समाजवाद में निहित था और यह एक ऐसी व्यवस्था होगी जिसके अन्तर्गत वह अपने श्रम के सम्पूर्ण परिणाम का उपभोग कर सकेगा। इन उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिये यह आवश्यक था कि चीन की कम्युनिस्ट पार्टी मजदूर वर्ग को संगठित करती और इसने अपनी भूमिका को मेहनतकश जनता को राजनीतिक तौर पर शिक्षित करने के लिये निर्धारित किया क्योंकि कम्युनिस्ट पार्टी मेहनतकश वर्ग के अधिक विकसित हिस्सों का प्रतिनिधित्व करती थी।

इन लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिये सी.पी.सी. की परिवर्तन एवं सामाजिक रूपांतरण की अवधारणा कुओ मिन तांग के अधीन राष्ट्रवादियों से कहीं अधिक विकसित थी। साम्यवादियों के लिये केवल पश्चिमी साम्राज्यवाद को उखाड़ फेंकना पर्याप्त न था बल्कि चीन में युद्ध सामंतों के प्रभुत्व को भी समाप्त करना आवश्यक था। उनके लक्ष्य कहीं अधिक सामाजिक एवं आर्थिक समानता के पक्षधर थे।

लेनिन की अवधारणा साम्राज्यवाद, पूंजीवाद की चरमपराकाष्ठा तथा रूसी क्रान्ति के अनुभव ने चीन के साम्यवादियों को बहुत अधिक प्रभावित किया और उनको यह विश्वास हो गया कि रूस में पूंजीवाद का अपेक्षाकृत कमजोर आधार था और इसी कारण उनके देश में पूंजीवाद व्यवस्था को उखाड़ फेंकने की अधिक सम्भावनायें थीं। इसी के साथ-साथ वे यह अनुमान लगाने में भी सफल हुए कि रूस की भांति उनको भी अपने स्वयं के देश में युद्ध सामंतों की व्यवस्था का सफाया करना होगा। इसको कृषक वर्ग तथा राष्ट्रीय पूंजीपति वर्ग (मध्यम वर्ग) के साथ गठबंधन करने ही किया जा सकता था तथा इन वर्गों के हित भी

सामन्तवाद का विरोध करने में ही निहित थे। दूसरे शब्दों में चीन की क्रान्ति का प्रथम चरण रूस की क्रान्ति की भांति न होगा। पहले लोकतन्त्र को विकसित करने की आवश्यकता थी। लेकिन इस स्थिति को भी मेहनतकश वर्ग के द्वारा किसानों के गठबंधन के साथ सम्पन्न किया जाना था क्योंकि पूंजीपति वर्ग भी कमजोर था।

हमें यहां पर इस तथ्य को भी याद रखना चाहिये कि इन विचारों को रूसी क्रान्ति के सफल अनुभवों के आधार पर अंधाधुंध तरीके से स्वीकार नहीं किया गया था। उन्होंने अपने मार्क्सवादी विचारों तथा रूसी क्रान्ति के अनुभवों की शिक्षाओं को चीन की परिस्थितियों में लागू करने का प्रयास किया। ऐसा अपने स्वयं के राजनीतिक अनुभवों के परिवेश में किया गया था। 1923 तक भी वे चीनी समाज की जटिलताओं को समझने का प्रयास करते रहे। इन जटिल परिस्थितियों में सुस्पष्ट स्थिति मज़दूर वर्ग का जबरदस्त उफान था। इसी कारणवश इन वर्षों में उन्होंने स्वयं को मज़दूर वर्ग के आंदोलन को विकसित करने में प्राथमिक तौर पर व्यस्त रखा।

31.5 प्रारम्भिक गतिविधियां

चीन में 1920 में 46 मज़दूर हड़तालें हुईं और 1921 में 50। यह मुख्यतः कम्युनिस्ट पार्टी के प्रयास ही थे कि मज़दूर वर्ग में राजनीतिक चेतना पैदा हो गई थी। अध्ययन केन्द्रों तथा मज़दूरों के लिये पत्रिकाओं के अलावा कम्युनिस्ट गुटों ने मज़दूरों की विशाल सभाओं को सम्बोधित किया। इन प्रयासों में निम्न प्रयास भी शामिल थे –

- शंघाई मैटल मैकेनिक्स यूनियन की स्थापना
- हुनान वर्किंग मैन्स एसोसियेशन के साथ सम्पर्क
- चैंग-सिन-तेन में रेलवे मैन्स यूनियन का गठन।

मज़दूरों के लिये बहुत से शाम के समय चलने वाले स्कूलों को संगठित किया। इस सन्दर्भ में माओ तथा उनकी पत्नी के द्वारा चांगसा में चलाये गये शैक्षिक आंदोलन का उदाहरण दिया जा सकता है। अगस्त 1921 में एक स्व-चालित कालिज का प्रारम्भ किया गया। 1922 तक 30,000 से लेकर 40,000 तक की मज़दूरों की संख्या को इस तरह की गतिविधियों में शामिल कर लिया गया था। अन्यान के खान मज़दूरों के बीच माओ त्से-तुंग ने 7 खान मज़दूरों की एक पार्टी इकाई की स्थापना की। इस पार्टी इकाई ने उन खान मज़दूरों के मध्य एक यूनियन स्थापित करने में सफलता प्राप्त की।

कैन्टन में छपाई, तम्बाकू तथा कपड़ा उद्योगों में मज़दूरों को संगठित करने के उद्देश्य से श्रमिक आंदोलन के लिये एक कमेटी की स्थापना की गई। प्रथम चीनी मज़दूर यूनियन का सम्मेलन 1 मई, 1922 को हुआ। चीन के इतिहास में पहली बार अगस्त 1922 में महिलाओं के द्वारा पूडोंग के रेशम कताई मिल में महिला मज़दूरों की एक व्यापक हड़ताल हुई।

इस तरह की गतिविधियों का युद्ध सामंतों ने विरोध किया और इनका पूरी बर्बरता के साथ दमन हुआ। यूनियनों को बन्द कर दिया गया, हड़तालों में बाधा उत्पन्न की गई, तालाबंदी को घोषित कर दिया गया और मज़दूरों की व्यापक स्तर पर हत्या की गई। इस तरह से कम्युनिस्ट गतिविधियों तथा मज़दूर वर्ग के आंदोलन के प्रथम बहादुराना चरण का अन्त हुआ। यद्यपि मज़दूरों की ये सभी हड़तालें सफल न हुई थीं फिर भी सी.पी.सी. ने मज़दूर वर्ग के मध्य राजनीतिक चेतना को विकसित करने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की।

मज़दूर वर्ग की इस असफलता का कारण यह था कि मज़दूर वर्ग स्वयं ही इन युद्ध सामंतों की तथा इनकी सरकारों की पूरी ताकत के अनुरूप तैयार न था। मज़दूरों को सहयोगियों की आवश्यकता थी। इसलिये कम्युनिस्टों ने किसानों को संगठित करने के अपने प्रथम प्रयास किये, लेकिन ऐसा केवल कैन्टन में किया गया। यद्यपि वे अभी तक एक ऐसे मज़दूर किसान गठबंधन को प्राप्त करने में सफल न हो सके थे जो मजबूत मज़दूर तथा किसान आंदोलनों पर आधारित होगा। राष्ट्रवादी पूंजीपति वर्ग ने साम्राज्यवाद तथा युद्ध सामंतों के विरुद्ध संघर्ष करते हुए स्वयं को संगठित तौर पर सी.पी.सी. की गतिविधियों के साथ संबंधित न

किया था। वे अलग से कार्यरत थे और अव्यवस्थित भी। यह एक ऐसा समय था जबकि सी.पी.सी. एवं कुओ मिन तांग दोनों की अपनी राजनीतिक शिक्षा को प्राप्त करते हुए निम्नलिखित बातों को सीखना था—

- स्वयं को पुनः संगठित करना,
- चीन में स्वयं को एक ऐसे मजबूत गठबंधन में संगठित करना जिसके अन्दर सभी प्रगतिशील सामाजिक शक्तियां शामिल हों, और
- सामान्य शत्रुओं के विरुद्ध संघर्ष करने की एक संयुक्त नीति को तैयार करना।

बोध प्रश्न 2

1) अपने गठन के काल में सी.पी.सी. के क्या विचार थे? उत्तर 10 पंक्तियों में दें।

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

2) लगभग 10 पंक्तियों में सी.पी.सी. की प्रारम्भिक गतिविधियों की विवेचना कीजिये।

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

31.6 सारांश

चीन की कम्युनिस्ट पार्टी का गठन 1921 में हुआ और उसने चीन की जनता को एक नयी विचारधारा उपलब्ध कराने में महत्वपूर्ण योगदान किया। चार मई आंदोलन को मार्क्सवादी विचारों को संगठित तौर पर प्रसारित करने का प्रथम प्रयास माना जा सकता है। चार मई आंदोलन के साथ ही छापाखाने, सार्वजनिक सभाओं तथा नवीन साहित्य आदि का भी प्रसार हुआ और इसने विचारों के विकास में भी योगदान किया। मज़दूर वर्ग में राजनीतिक चेतना की वृद्धि करने के लिये सी.पी.सी. उत्तरदायी थी। मज़दूर वर्ग तथा पी.पी.सी के प्रथम क्रान्तिकारी आंदोलन का अन्त बर्बर दमन के कारण हुआ।

31.7 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

1) आप अपने उत्तर का आधार उपभाग 3.2.2 को बनायें।
2) आपका उत्तर उपभाग 3.2.3 पर आधारित होना चाहिये।

बोध प्रश्न 2

1) आपके उत्तर का आधार भाग 3.5 होना चाहिये।
2) आप अपने उत्तर का आधार भाग 3.5 को बनाये।